द्वितीय अध्याय

DAILY ASSAM

वर्ण-विवेचन

1. वर्ण

1. राम फल खाता है।
2. रा | म | फ | ल | खा | ता | है।
3. र् | आ | म् | अ | फ् | अ | ल् | अ | ख् | आ | त् | आ | ह् | ऐ

ऊपर के वाक्य - 'राम फल खाता है'। — में क्रमशः र्, आ, म्, अ, फ्, अ, ल्, अ, ख्, आ, त्, आ, ह्, ऐ वर्ण हैं।

भाषा में वर्णों का विशेष महत्व हैं। भाषा के छोटे-से-छोटे टुकड़े हैं। भाषा के छोटे-से-छोटे टुकड़े को 'वर्ण' कहते हैं। इनको ध्वनि या अक्षर भी कहते हैं।

वर्णमाला

अ, आ, इ, ई
क, ख, ग, घ

ऊपर के वर्णों में दो प्रकार के वर्ण हैं। परन्तु वे समूह में क्रमशः लिखे हुए हैं। इसी पद्धति से जब किसी भाषा के सभी वर्णों को क्रम से जब हम लिखते हैं, तब उस वर्ण समूह को वर्णमाला कहते हैं।

''वर्णों का समूह वर्णमाला कहलाता है।''

हिंदी वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ	ए ऐ ओ औ अं अः
क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न
प फ ब भ म	य र ल व
श ष स ह	क्ष ड़ ढ़ त्र ज्ञ

वर्ण के प्रकार —

पृथ्वी पर जितनी भी भाषाएँ बोली जाती हैं, उनकी वर्णमालाओं में दो प्रकार के वर्ण होते हैं।

स्वर और व्यंजन, हिंदी भाषा की वर्णमाला में भी दो प्रकार के वर्ण हैं।

स्वर—अ, इ-इन वर्णों के उच्चारण में किसी दूसरे वर्ण या ध्वनि की सहायता हम नहीं लेते हैं। इनको हम स्वंतत्रतापूर्वक, जिह्वा के बिना इधर-उधर उठाए उच्चारण कर सकते हैं।

''स्वर वर्ण उसे कहते हैं, जिसकी उच्चारण करते समय किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है।''

हिंदी भाषा में कुल 11 स्वर हैं—

अ आ, इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन—क, ख - इन वर्णों में 'स्वर' वर्ण की सहायता ली जाती है।

क-ख व्यंजन वर्ण में — क+अ, ख+अ, अ स्वर वर्ण के सहयोग से हम व्यंजनों का उच्चारण करते हैं।

हिंदी वर्णमाला में कुल 33 व्यंजन वर्ण हैं।

प्रयत्न—व्यंजन का उच्चारण करते समय हमारी जिह्वा भीतर से आने वाली प्राणवायु को रोकती है। इस रोकने की क्रिया को ही प्रयत्न कहते हैं। जैसे — क व्यंजन का उच्चारण करते समय हमारी जिह्वा प्राणवायु को कंठ से स्पर्श कर रोक रही है। अत: क स्पर्श व्यंजन हुआ।

संपूर्ण व्यंजन वर्णों को हम इस प्रकार वर्गों में रख सकते हैं।

	स्थान	1. स्पर्श	2. उष्म	3. अंतस्थ
1.	कंठ	क ख ग घ ङ	ह	—
2.	तालु	च छ ज झ ञ	श	य
3.	मूर्धा	ट ठ ड ढ ण	ष	र
4.	दंत	त थ द ध न	स	ल
5.	ओष्ठ	प फ ब भ म	—	व

अभ्यास

1. इन्हें 'है' या 'नहीं' जोड़ कर सही करो —

   (अ) वर्ण भाषा की सबसे बड़ी इकाई है। (आ) हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर है। (इ) हिंदी वर्णमाला में 70 व्यंजन हैं।

2. हिंदी वर्णमाला में कितनी प्रकार के वर्ण होते हैं?
3. 'प्रयत्न' से तुम क्या समझते हो।
4. स्वर और व्यंजन में क्या अंतर है?
5. स, च, र वर्णों के उच्चारण स्थान बताओ।

DAILY ASSAM

2. विशेष वर्ण

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे विशेष वर्ण हैं, जिनके आकार प्रकार और उच्चारण को जानना हमारे लिए बहुत ही आवश्यक है। ये निम्नलिखित हैं -

1. **अः** — 'अ' स्वर के आगे दो बिंदु (:) लगा हुआ है। इसका उच्चारण 'अह' जैसा होता है। इसे विसर्ग कहते हैं। विसर्ग के इन बिंदुओं को हमेशा स्वर या अक्षर के आगे लगाते हैं। जैसे - प्रायः, दुःख।

विसर्ग को व्यंजन माना गया है, क्योंकि इसका मूल उच्चारण 'ह' जैसा ही है।

2. **अं** — 'अ' स्वर के ऊपर एक बिंदु (ं) लगा हुआ है। इसे अनुस्वार कहते हैं। उच्चारण के अनुसार ये अनुनासिक व्यंजन हैं, क्योंकि ये ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आदि नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर आता है। अनुस्वार बिंदु (ं) के रूप में यह हमेशा अन्य वर्णों के ऊपर लगता है। जैसे -

(अनुस्वार अं)

अंक — अ + ङ + क + अ = ङ कवर्ग पंच — प + अ + ङ + च् + अ = ञ चवर्ग

ठंड — ठ + अ + ण + ड + अ = ण टवर्ग मंत्र — म + अ + न + त् + र् + अ = त् तवर्ग

पंप — प + अ + म् + प + अ = म पवर्ग

3. **अँ** — (अ) स्वर के ऊपर जो चंद्रबिंदु (ँ) लगा हुआ है, इसे अर्द्ध अनुस्वार कहते हैं। उच्चारण के अनुसार यह भी अनुनासिक व्यंजन है। यह स्वर के साथ आता है, किंतु अनुनासिक है। यह सभी अनुनासिक व्यंजनों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। इसका एक समान उच्चारण होता है, जो सीमित अनुनासिक्य रहता है। जैसे —

हंस — ह् + अं + स् + अ = अँ चाँद — च् + आँ + द् + अ = आँ

साँप — स् + आँ + प् + अ = आँ आँख — आँ + ख + अ = आँ

4. ए-ऐ-ओ-औ-ये चारों स्वर वर्ण हैं। इन्हें संयुक्त स्वर कहते हैं, क्योंकि ये दो मूल स्वरों के मेल से बने हैं। इनका उच्चारण दो स्वरों को मिलाने से होता है। जैसे —

मूल स्वर	संयुक्त स्वर	उच्चारण	मूल स्वर	संयुक्त स्वर	उच्चारण
आ + इ	ए	नरेश, नरेंद्र	आ + ए	ऐ	सदैव
अ + ओ	औ	महौषधि	आ + उ	ओ	महोदय

5. क्ष, त्र, ज्ञ — ये तीनों वर्ण ऐसे हैं, जो लिखित रूप में हिंदी वर्णमाला के स्वतंत्र वर्ण हैं, किंतु उच्चारण के अनुसार ये मूल वर्ण नहीं हैं, क्योंकि ये दो मूल व्यंजन वर्ण के मेल से बने हैं। इसलिए इन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनका उच्चारण भी मूल वर्ण के अनुसार ही होता है। जैसे —

मूल व्यंजन	संयुक्त व्यंजन	उच्चारण	मूल व्यंजन	संयुक्त व्यंजन	उच्चारण
क् + ष्	= क्ष् + अ + क्ष्य = क्ष	— रक्षा, कक्षा	ज् + ञ्	= ज्ञ् + अ + ज्ञ = ज्ञ, ग्य	— ज्ञान, आज्ञा
त् + र्	= त्र् + अ + त्र	— यात्रा, सत्र	श् + र्	= श्र् + अ = श्र + श्र	— श्रम, श्री

टिप्पणी : ज + ञ = ज्ञ का उच्चारण आजकल हिंदी में 'ग्य' हो गया है।

6. ड़, ढ़ — ये दोनों वर्ण व्यंजन है। ड् द् वर्ण के विकसित रूप है। ड और ढ में जिह्वा का अग्रभाग मूर्द्धा स्थान में लगता है, किंतु इसमें जिह्वा का अग्रभाग उलटा होकर मूर्द्धा भाग में लगता है। ड़ और ढ़ के पहले एक स्वर ध्वनि का होना जरूरी है। इसलिए ये शब्द के आदि में कभी नहीं आते। हमेशा शब्द के मध्य या अंत में इनका प्रयोग होता है।

जैसे — अखाड़ा, लड़का, अड़तालीस, जड़।

7. य, व—ये दोनों वर्ण व्यंजन है, किंतु कभी कभी ये स्वर के रूप में बदल जाते हैं। इसीलिए इन्हें अर्द्ध स्वर भी कहते हैं। जैसे — हलुवा = हलुआ, गये = गए

8. स्वर की मात्रा — जब स्वर शब्द के आदि में स्वर आते हैं तो उनको मूल रूप में ही लिखना चाहिए। जैसे — आम,

इमली, उल्लू और जब शब्द के भीतर या अंत में स्वर आते हैं तो साथ के व्यंजन से वे स्वर कुछ परिवर्तित होकर मिल जाते हैं। स्वर के इस परिवर्तित रूप को 'मात्रा' कहते हैं। जैसे — र + आ + म = राम । न + द + ई = नदी ।

स्वर की मात्रा	शब्दों में उच्चारण	शब्दों में मात्रा का	लिखित रूप
अ = 0	क् + अ + म् + अ + ल् + अ	= कमल	
आ = ा	म् + आ + त् + आ	= माता	
इ = ि	त् + इ + थ् + इ	= तिथि	
ई = ी	श्र् + ई + म् + अ + त् + ई	= श्रीमती	
उ = ु	म् + उ + क् + उ + ट् + अ	= मुकुट	
ऊ = ू	स् + अ + प् + ऊ + त् + अ	= सपूत	
ए = े	म् + ए + ख् + अ + ल् + आ	= मेखला	
ऐ = ै	क + ऐ + स् + आ	= कैसा	
ओ = ो	र् + ओ + ट् + ई	= रोटी	
औ = ौ	य + औ + व् + अ + न् + अ	= यौवन	
ऋ = ृ	क् + ऋ + ष् + इ	= कृषि	

टिप्पणी – 1. 'अ' स्वर का कोई स्वतंत्र मात्रा-चिह्न, नहीं होता, क्योंकियह हमेशा ही व्यंजन में मिला रहता है।
जैसे — क् + अ = क
2. हिंदी भाषा के शब्दांत वाले 'अ' स्वर का उच्चारण नहीं होता। राम + राम् आठ + आठ्

अभ्यास

1. अनुस्वार और अर्द्ध अनुस्वार में क्या अंतर है ?
2. अनुस्वार कौन-कौन से नासिक्य व्यंजनों के स्थान पर आता है ?
3. संयुक्त व्यंजनों के नाम बताओ।
4. ऐ, ओ, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र- इन संयुक्त वर्णों को मूल वर्णों में बदलो।
5. 'सीता की साड़ी सुंदर है।' — इसमें कौन-कौन से स्वरों की मात्राओं का व्यवहार हुआ है ?

3. संधि

हिम + आलय = अ +आ = आ = हिमालय
विद्या + आलय = आ + आ = आ = विद्यालय
महा + आशय = आ + आ = आ = महाशय
औषध + आलय = अ + आ = आ = औषधालय

शब्द में जब दो अक्षर पास-पास आते हैं तो उच्चारण के अनुसार उनमें मेल होकर एक विशेष अक्षर हो जाता है।
''दो वर्णों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।''

संधि के प्रकार

स्वर व्यंजन और विसर्ग वर्णों के अनुसार संधि तीन प्रकार ही होता है।
जैसे — स्वर संधि, व्यंजन संधि और विसर्ग संधि।

(अ) स्वर संधि — परमार्थ = परम + अर्थ = अ + आ = आ कपीश = कपि + ईश = इ + ई = ई
भानूदय = भानु + उदय = उ + उ = ऊ इत्यादि = इति + आदि = इ + आ = या
महर्षि = महा + ऋषि = आ + ऋ = अर्

ऊपर के शब्दों के क्रमश: परम + अर्थ, कपि + ईश, भानु + उदय, इति + आदि, महा + ऋषि, दो-दो खण्ड हैं। प्रत्येक शब्द में दो स्वर पास-पास हैं। इन स्वरों का जब मेल हुआ तब उच्चारण के अनुसार क्रमश: आ, ई, ऊ, या, अर् स्वर बन गए। इन स्वरों के मेल से खण्डित शब्द भी मिल कर एक हो गए और उनका रूप —
परमार्थ, कपीश, भानूदय, महर्षि, जैसा हो गया।

'दो स्वरों के पास पास आने के कारण, उनके मेल से दो विकार होता है उसे स्वर संधि कहते हैं।'

(आ) व्यंजन संधि —

षड़ानन = षट् + आनन = ट् + आ = ड़ा जगदीश = जगत् + ईश = त् + ई = दी

उच्चारण = उत् + चारण = त् + चा = च्चा सज्जन = सत् + जन = त् + ज = ज्ज

ऊपर के शब्दों में क्रमश: ट् + आ = ड़ा, त् + ई = दी, त् + चा = च्चा, त् + ज = ज्ज रूप व्यंजन और स्वर के मिलने से हुआ। एक स्वर और एक व्यंजन या दो व्यंजन मिलकर जब एक नये व्यंजन निर्माण करते हैं तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं। ऊपर इन नये व्यंजनों के निर्माण के कारण क्रमश: पड़ानन, जगदीश, उच्चारण और सज्जन शब्द बने हैं।

'पहला वर्ण व्यंजन और दूसरा वर्ण स्वर या व्यंजन हो तो उनकी संधि को व्यंजन संधि कहते हैं।'

(इ) विसर्ग संधि —

पुरस्कार = पुर: + कार = : + क = स्क दुरुपयोग = दु: + उपयोग= : + उ = रु

नीरोग = नि: + रोग = : + र = र निर्गुण = नि: + गुण = : + ग = र्ग

प्रात:काल = प्रात: + काल = : + क = क

ऊपर के शब्दों में विसर्ग के मेल से दो वर्णों में क्रमश: इस प्रकार परिवर्तन हुआ हैं —

: + क = स्क, : + उ = रु, : + र = र, : + ग = र्ग, : + क = क

अत: विसर्ग जब अपने पास के स्वर या व्यंजन से मिलता है तो वर्ण में परिवर्तन हो जाता है। इस परिवर्तन से कभी तो या वर्ण आ जाता है और कभी वर्ण लुप्त भी हो जाता है। जैसे कि ऊपर दिखाया गया है। विसर्गों में परिवर्तन या मेल से ही ऊपर के शब्द - पुरस्कार, दुरुपयोग, निरोग, निर्गुण, और प्रात:काल बने हैं।

'जब विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है तो उसे विसर्ग संधि कहते हैं।'

संधि-ज्ञान से लाभ —

1. वर्णों की संधि के ज्ञान से हम शब्द के टुकड़े कर सकते हैं। 2. इससे शब्दों के अर्थ को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।
3. नया वर्ण किस प्रकार निर्मित होता है, इसका भी ज्ञान होता है। 4. वर्ण कभी-कभी लुप्त भी हो जाते हैं, यह भी समझ सकते हैं।

अभ्यास

1. इनमें 'है या नहीं' जोड़ कर सही करो —
   (अ) शब्दों के मेल को संधि कहते हैं।
   (आ) स्वरों के मेल को विसर्ग संधि कहते हैं।
   (इ) संधि के ज्ञान से हम शब्दों का अर्थ समझ सकते हैं।
2. रिक्त स्थानों में सही शब्द भरो —
   (अ) ..... के मेल को संधि कहते हैं।
   (वाक्यों, शब्दों, वर्णों, भाषाओं)
   (आ) स्वरों के मेल को ..... संधि कहते हैं।
   (व्यंजन, विसर्ग, स्वर)
   (इ) ..... के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं।
   (स्वर और विसर्ग, स्वर और स्वर, व्यंजन और स्वर)
3. संधि-विच्छेद करो —
   विद्यालय, पुस्तकालय, जगदीश, पुरस्कार।
4. संधि करो —
   महा + आशय, सत् + जन, दु: + उपयोग।